श्रीसारदानामसंकीर्तनम्

ध्यानम्

ॐ ध्यायेद् हृदम्बुजे देवीं तरूणारूणविग्रहाम्। वराभयकरां शान्तां स्मितोत्फुल्लमुखाम्बुजाम्॥
स्थलपद्मप्रतीकाश-पादाम्भोज-सुशोभनाम्। शुक्लाम्बरधरां धीरां लज्जापटविभूषिताम्॥
प्रसन्नां धर्मकामार्थमोक्षदां विश्वमङ्गलाम्। स्वनाथवामभागस्थां भक्तानुग्रहकारिणीम्॥

त्वं मे ब्रह्म सनातनी मा। सारदयीश्वरी सुभगे मा॥

१ ब्रह्मानन्द-स्वरूपिणि मा	२३ सीता-राम-कारिनि मा	४७ सद्गति-सम्मति-दायिनि मा
२ ब्रह्मशक्ति-सुखदायिनि "	२४ कृष्ण-राधिका-रूपिणि "	४८ भवतारिनी करुणेश्वरि "
३ सच्चित्सुखमयरूपिणि "	२५ कमनीयाकृति-धारिणि "	४९ त्रिपूरे सुन्दरि मोहिनि "
४ सृश्टि-स्थिति-लय-कारिणि	२६ भवसागर-भयहारिणि "	५० ब्रह्माण्डोदर-धारिणि "
५ ब्रह्म-सुधाम्बुधि-केलिनि "	२७ शान्ति-सौख्य चिरदायिनि "	५१ प्रेमानन्द-प्रवर्षिणि "
६ ब्रह्मात्मैक्य- शुभङ्करी मा	२८ गिरिशङ्कोपरि वासिनि "	५२ सर्व-चराचर पालिनि "
	२९ हरार्ध नारी-रूपिणि "	५३ भूवन-चतुर्दश-प्रसविनि "
	३० नटन महेश्वर-सङ्गिनि मा	५४ नाना-लीला-कारिणि मा
७ जीवेश्वरभित्-कौतुकि मा	३१ हरहर्षोत्करि-नर्तिनि मा	५५ विविध-विभूति-विधारिणि मा
८ अगाधलीला रूपिणि "	३२ सारदेश्वरी-षोड़शि "	५६ ज्ञानालोक-प्रदायिनि "
९ चिन्मयरूप-विलासिनि "	३३ साधक मानस शोधिनि "	५७ विश्व- क्रीड़ा-कौतुकि "
१० बहिरान्तर सुख-वर्धिनि "	३४ सर्व सुभाग्य-प्रसाधिनि "	५८ विश्वाधिष्ठित-चिन्मयि "
११ ज्ञानानन्द-प्रवर्षिणि "	३५ गुह-गजमुख-जनिदायिनि "	५९ मन्दस्मित-स्मरहारिणि "
१२ दिव्यरसामृत-वर्षिणि "	३६ एकानेक-विभागिनि "	६० भक्तानुग्रहकारिणि "
१३ मूलाधार-निवासिनि "	३७ हिमगिरि-नन्दिनि-लासिनि	६१ योग-भोग-वर-दायिनि "
१४ सहस्रारशिव-सङ्गिनि मा	३८ सर्व-चराचर-सर्जिनि मा	६२ शान्ति-सुधा-निःस्यन्दिनि मा
१५ आद्ये शक्ति-स्वरूपिणि मा	३९ सर्व-वराभय-कारिनि मा	६३ रम्य-कान्ति-चिरधारिणि मा
१६ चितिसुख-दायिनि तारिणि "	४० सर्व-जगत्त्रय-साक्षिनि "	६४ समस्त-सूगुणाभूषणि "
१७ शुभमति दायिनि शङ्करि "	४१ निखिलाधीश्वरी योगिनि "	६५ समाधि-चिर-चिति-दायिनि
१८ दुर्गति-दुर्मति-नाशिनि "	४२ एला-गन्ध-सुकेषिनि "	६६ वीर्य-वलाभय-कारिणि "
१९ महाकाल हृदि-नर्तिनि "	४३ चिन्मय-सुन्दर-रूपिणि "	६७ तापत्रयभय-हारिणि "
२० जीवशिवान्तर-वर्तिनि "	४४ परमानन्द-तरङ्गिनि "	६८ सर्वोत्तुङ्ग-सुवासिनि "
२१ जगज्जननि जय दायिनि "	४५ क्षान्ति-महागुण-वर्षिणि "	६९ प्रसन्न-वरदे भैरवि "
२२ तड़िल्लसित-सौदामिनि मा	४६ कान्ति-वराभय दायिनि मा	७० हवन-जपार्चन-साधिनि मा

७१ चन्डासुर-खल-घातिनि मा	८७ धर्मस्थापन-कारिणि मा	१०३ दुर्वल-सवल-सुकारिणि मा
७२ सकल-देव-जय-साधिनि "	८८ रम्य-सहज-पथ-दर्षिनि "	१०४ दुःख-दैन्य-भय-नाशिनि "
७३ दुष्ट-मूण्ड-वधकारिणि "	८९ मातृभाव-मुख-षोधिनि "	१०५ सर्वभूत-हित-साधिनि "
७४ चामुण्डेश्वरि दर्पिणि "	९० निर्मलभक्तोत्कर्षिणि "	१०६ सम्स्त लोकाभयकरि "
७५ माहिष-दर्प-विनाशिनि "	९१ दिव्याद्भूत-चरितार्थिनि "	१०७ दुर्गति-नाशिनि दुर्गे "
७६ माहेश्वर-सुख-वर्धिनि "	९२ रामकृष्ण-सहधर्मिणि "	१०८ नारायणि जगदाद्ये मा
७७ महिषासुर-खल-मर्दिनि "	९३ जय-रामाख्य-सुवाटिनि "	
७८ त्रिगुण-त्रिलोक-त्रिरूपिणि "	९४ मृग-केसरिवर-वाहिनि मा	

७९ निर्गुण-सगुण-विचित्रिणि मा	९५ दुर्ग-हिमाचल-नन्दिनि मा
८० कारित- ध्यानानन्दिनि "	९६ नरेन्द्र-हृदय-निवासिनि "
८१ भ्रान्ति-रोगविष-हारिणि "	९७ दर्पण-चित्त-विभासिनि "
८२ कान्ति-योग-सुख-दायिनि "	९८ चेतो दर्पण-काशिनि "
८३ वीर-नरेन्द्र-प्रहर्षिणि "	९९ नव-नव-रूप-सुदर्शिनि "
८४ सम्स्त-लोकोद्धारिणि "	१०० लोकोत्तरकृति-दर्शिनि "
८५ रामकृष्ण-नवरूपिणि "	१०१ सुन्दररूप-विकाशिनि "
८६ धर्मग्लानि-विनाशिनि मा	१०२ दिव्य-गुणाकर-धारिणि मा

(जय जय जय जगदाद्ये मा । नारायणि जय दुर्गे मा ॥) ३
त्वम् मे ब्रह्म सनातनि मा । सारद ईश्वरि सुभगे मा ॥

स्तवः

अनन्तरूपिणि अनन्तगुणवति अनन्तनाम्नि गिरिजे मा ।
शिवहृन्मोहिनि विश्वविलासिनि रामकृष्ण-जयदायिनि मा ॥

जगज्जननि त्रिलोकपालिनि विश्वसुवासिनि शुभदे मा ।
दुर्गतिनाशिनि सन्मतिदायिनि भोग-मोक्ष-सुख-कारिणि मा ॥

परमे पार्वति सुन्दरि भगवति दुर्गे भामति त्वं मे मा ।
प्रसीद मातर्नगेन्द्रनन्दिनि चिरसुखदायिनि जयदे मा ॥